International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 29-07-2026, Accepted: 28-08-2026, Published: 12-09-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 159-160

डा० सूर्यपाल सिंह के नाट्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ प्रकाश चन्द्र गिरि [1], जगदीश यादव [2]
[1] प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एम एल के पीजी कॉलेज, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] एम एल के पीजी कॉलेज, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12232

सारांश
राष्ट्रीय चेतना डा० सिंह के साहित्य में मानूव स्वभाव एवं पर्यावरण के सम्बन्धो तथा मानवीय गुणों के ब्यावहारिक प्रदर्शन एवं कार्य तथा महात्वाकांक्षाओं के साथ ही साथ राष्ट्रीय चेतना की भावना का स्वर एवं विकास अपने उच्चसोपान पर है। वह राष्ट्र के नागरिको के कर्तव्यों द्वारा निर्वहन किया जाता है। यह राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर देने वाले अधिकार एवं आधुनिक कार्यों आचरणों तथा विचारों द्वारा राष्ट्रीय कविता की अलख जगाने वाले महापुरुओं के वर्ण गाथाओं एवं अकी भूमिकाओं का वर्णन कर अपने साहित्य साहित्य के माध्यम से जन–मानस के समक्ष उनके महत्व को प्रस्तुत करना डा सिंह के राष्ट्रीय चेतना बादी साहित्यकार होने का प्रमाण है मिलता है। इन बिन्दुओं एवं प्रसंगों के माध्य से इनका वर्णन किया जा सकता है।

मूल शब्दः राष्ट्रीय चेतना, डॉ. सिंह, साहित्य, मानवीय स्वभाव, पर्यावरण, मानवीय गुण

राष्ट्रीय चेतना की भावना का प्रसंग

डा० सिंह ने राष्ट्रीय चेतना की भावना का प्रसंग अपने काण्यों के माध्यम से भी प्रस्तुत किया है। इसका प्रमाण उनके प्रथम काव्य संग्रह (पर अभी संभावना ४५ (२००५) मे प्रबल रूप से मुखर हुआ है। इसकी भूमिका में कवि मे कविता के महत्वपूर्ण कहा है कि आदमी स्वप्न देखता है। जीवन रहे भी रहेंगे, अनेक विनाशक संसाधनों के बीच सूजन कर्म का सतत प्रवाह सपनों के बिना कैसे संभव है ? सपनों का होना कविता का होना होना है। समाज है तो समूह है, संगठन है, विभाजन है। वर्गहीन समाज के सपनों के बीच वर्ग है, निन्दाएँ है और निष्ठाओं के रखवार भी। कविताएँ है इन सभी घेरों को तोड़ती है। कविता कर्म को छूते हुए आदमी को संघर्ष के लिए खड़ा कर सकती है, काँपते हाथों को सम्बल दे सकती है। असाध्य तनावों के बीच राहत एवं सुकून का स्वर उभार सकती है। कविताओं के बिना समाज की कल्पना कर आप सिहर उठेगें।

सुभाष चन्द बोस के नेतृत्व कौशल

जिसमें मानव जीवन मूळ तत्व माना है। जिसमें सभी बाधाओं को पर कर अपने लक्ष्य को सफलतापूर्वक पाने का मार्ग ही कविता है। इसी के साथ कविता संघर्ष एवं स्वतंत्रता को जगाने का एक माध्यम भी है युद्धियो की विभीषिका भारत झेल रहा था तो उस समय सैनिको था प्रजा जानो मे उत्साह भरने का कार्य कविता के द्वारा किया जाता था। जिसका मुख्य उद्देश्य जगाने और उसका उसका प्रसार करने का कार्य माना जाता है। साहित्य आज भी स्वतंत्रता का मूल स्त्रोत व वाहक माना जाता है। डा सिंह के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना को विभिन्न माध्य से सर्वोपरि माना गया है। इसका प्रारम्भ एक में से वर्जित किया गया है। जिसमें डा० सिंह के नाट्य साहित्य से माना जाता है। जिसका सबसे मजबूत उदाहरण 'आजादी की पौध को जिसमे भारत को अंग्रेजो की गुलामी से मुक्त करने के लिए राष्ट्र की सेना एवं अलग सरकार का गठन एवं संचालन करने वाले प्रतिभाशाली एवं कान्तिकारी नेता सुभाष चन्द बोस के नेतृत्व कौशल को आधार बनाकर यह नाटक लिखा गया है जिसमे आजादी भीख के रूप में न माग कर अपने पौरुष और कान्ति के द्वारा सुभाष भारत की स्वतवता संगर्ष से माध्यम से पाना चाहते हैं। जो उनके साहस और कुशल नेतृत्व को प्रदर्शित करता है। इस नाटक के साथ प्रथम पृद्ध ही लेखक ने एक ओज पूर्ण नाटक के पूरे भाव को प्रस्तुत कर दिया है। ओज पूर्ण से के माध्यम से जवाँ हैं हिन्द देश के बतन पे सिर कटाएँगे। लहू से सीच सींच कर वतन नया बनाएँगे।

नाटक में सुभाष जी के कुशल नेतृत्व से भयभीत अंग्रेज अधिकारियों की मनोदशा का सूक्ष्म चित्रण भी किया गया है। यह राष्ट्रभक्ति का ही प्रभाव है की अंग्रेज प्रशासन उनके कार्यों से डरकर उन्हें नजरबंद कर देता है। परतु अपनी प्रतिभा एवं चतुरता का प्रदर्शन करते हुए सुभाष उस व्यवस्था को चुनौती देते हुए बाहर निकल कर जर्मनी चले जाते हैं। जिससे पूरा का पूरा अंग्रेजी प्रशासन एवं खुपिया व्यवस्था हक्का बक्का रह जाता है। वह कितना भयभीत हो जाता है। इस उदाहरण को नाटक के लघु अंश के माध्यम से समझा जा सकता है

(जिलाधिकारी का चिन्तित सुद्रा में प्रवेश)

''ये लोग कहता है तुम लोग इण्डिया छोड़ों लीव इण्डिया' ये लोग सिर्फ माँगता है.....हम नही सुनंता है तो जेल जाता है। लेकिन वह बोस तूफान बन बन गया है। हमारा, इण्डियन सिपाही ''आजाद हिन्द फौज' में चला गया है। वह रायफल तान कर आजादी माँगता है। बहुत खतरनाक हो गया है बोस. यह इंडिया के लिए हार्ड टाइम है—

राष्ट्रीय स्वतंत्रता में अपनी भूमिका

यह उदाहरण राष्ट्रीय स्वतंत्रता में अपनी भूमिका निभाने वाले राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस से भयभीत अंगेजी प्रशासन का भय है जो अब बन्दूको का जवाब बन्दक से पाने के कारण कितना डर गया है। इसका अन्दाजा इस उदाहरण से ही लगाया जा सकता है। लेखक ने स्वतंत्रता का मार्ग सिर्फ भूख हड़ताल या जनसभा को न मानकर शस्त्र क्रन्ति को भी साना है जो आज भी राष्ट्र एव समाज के लिए कही न कहीं लाभ दायक है। नाटक में भारतीय स्वतंत्रता में नेता जी सुभाष चन्द्र के बास की भूमिका एवं महत्व को युवाओं के लिए एक प्रेरणा के कप में प्रस्तुत किया गया है। जो आज भी युवा वर्ग के लिए आदर्श एवं गौरव की बात है। इसी कारण इसका नाम नई पौध ''भी रखा गया हे है. कि राष्ट्र के युवा जबतक अपने राष्ट्र नाथको को याद नहीं रखते या उनके आदर्शो को अपनाते नहीं है। तबतक वे राष्ट्रीय चेतना

के प्रति सजग नहीं है। इस धारणा से कहीं न कही प्रेरित होकर डा सिंह ने अपने साहित्य मे राष्ट्रीय चेतना को प्रथम स्थान पर रखा है। यह नाटक होने के साथ ही साथ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जीवन चरित का एक अंश भी माना जा सकता है। इस नाटक के साथ ही साथ उन्हे नींद नहीं आती में भी राष्ट्रीय चेवना की के विचार एवं आदर्श को प्रस्तुत किया गया है यह नाटक देश के शासक सैनिक तथा नेता के भ्रष्टाचार को उजागर करने वाला नाटक है। नाटक होने के किया गया है। इस नाटक मे डा० सिंह ने भ्रष्टाचार को किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं माना है। इन लोगो के आपसी ताल मेल एवम कुचक्र में पड़कर पूरा का पूरा देश आर्थिक रूप से खोखला हो जाता है। इसकी भरपाई महंगाई का भार बढ़ाकर पूरा किया जाता है। तथा देश की जनता इस बोझ से दबती चली जाती है। अब दूसरी तरफ बेरोजगारी के कारण युवा वर्ग गलत कार्यों में अपने आप को लिप्त कर देते हैं। इस कारण भी राष्ट्र को प्रगति रुक जाती है। जिससे भ्रष्ट नेता अधिकारी तथा सैन्य – अधिकारी एवं उनके दलाल आपस में मिलकर बारी बारी से जनता के हितो एवं अधिकारो को कुचलते एव दबाते रहते हैं। इस धारणा को डा० सिंध के नाटक के माध्यम से मंचित कर प्रस्तुत किया 'है। जिससे राष्ट्र के युवा वर्ग का ध्यान राष्ट्र की इस समस्या की तरफ जा सके और उनके मन मे राष्ट्र के लिए एक सफल एवं ईमानदार तथा कुशल नेतृत्व करने वाले नेता का गुण भी विकासत हो सके जो समय आने पर राष्ट्र हित एवं कार्य में अपना सहयोग प्रदान कर सके। यह नाटक राष्ट्रीय चेतना का भाव अपने आप में समेटे हुए है। तीन अंकों में विभाजित है। इस नाटक का नायके मधुकर नामक पात्र है।

सच्चा राष्ट प्रेमी तथा कर्तष्य निष्ट

जो सच्चा राष्ट प्रेमी तथा कर्तष्य निष्ट व्यक्ति है। वह राष्ट आन्दोलन में जेल भी जाता है दूसरा सहनायक करने भूमिका अदा करने वाला पात्र मोलई है जो एक गरीब मजबूर तथा मजदूरी करने करने वाला वाला पात्र है। जिसे हत्या के जुर्म में झूठा फंसा दिया जाता है भ्रष्ट शाशन तंत्र मे समलित खलु पात्र राव साहब है। जो मीडिया का प्रमुख व संचालन कर्ता है। वह समाज में मीडिया के गलत और सरकार की झूठी निलियों का प्रसार एवं प्रचार करने की जिम्मेदारी सभालता है नायकम भष्ट प्रशासनिक अधिकारी की भूमिका निभाने वाले पात्र है। जो सरकार की गलत नीतियों को सही साबित करने में दिन रात लगे रहते हैं। तथा जनता के प्रत्येक हरकते पर नजर रखते है कि कही जनता आन्दोलन कर सड़क पर व उतर आये और इस 'भ्रष्ट सरकार का नींद टूट जाये वे इस कार्य में दिन रात लगे रहते हैं। 'टोगो' इस नाटक का ऐसा पात्र है। जो विदेशी अस्त–सस्त निर्माता कम्पनियों का दलाल है। वहीं इस फिराक में रहता है। कि कब किसी को देशों में युद्ध या लडाई छिड़ जाये और वह अवसर पाकर अपने हथियार को मंहगे दामों पर बेचकर अधिक से अधिक मुनाफा कमा सके। तो दूसरी तरफ सेना का भ्रष्ट अधिकारी कमाण्डर है। जिसे जनता के जनान्दोलन को दबाने के लिए लगाया गया है। वह अपने सेना के एक टुकड़ी के साथ जनता के प्रत्येक हरकत पर बाज के सामान पैनी नजर रखता है । वह सरकार के विरोध में कोई मी हरकत न कर सके। उसे ऊपर से समय–समय पर यह निर्देश दिया जाता है कि यदि जनसमूह कोई भी आन्दोलन या भीड़ एकत्र करे तो उसे उग्र एवं हिंसक भीड़ का रूप बताते हुए उनपर गोलियों की बौछार कर दिया जाय। कसाण्डर इस कार्य को करने के लिए तत्पर रहता है। वह टोगो के साथ मिल कर नये–नये कारनामे एवं षड्यंत्र रचा करता है। लेकिन एक दिन सरकार की गलत नीतियों कर का विरोध प्रबल रूप से करते नायकम को मधुकर के नेवत्व में गिरफ्तार कर लिया जाता है।

बातुल एवं मिसूराव

इस कार्य में बातुल एवं मिसूराव जनता की तरफ हो जाती है इस तरफ मदुकर के राष्ट्र तथा जनता की जीत हो जाती है आरे सारे राष्ट्र दरोही पकडे जाते है। एक परिर्वतन भरे गीत की गूज से में डॉ० सिंध ने इस नाटक का समापन किया किया है। जो निमवत है।

'नए विहान के लिए नई उठान के लिए
यहा देश माँगता तुम्हे
अश्रु पी रहे जवा का
प्यार माँगता तुम्हे नए निदान के लिए
नए विहान के लिए।

इस नाटक में डा० सिंध ने राष्ट्र के भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए देश के मधुकर जैसे युवाओं को राजनीति में देश सेव के भाव के साथ आगे आने का आहवान किया है। जिससे राष्ट को एक नये दिशा एवम मार्ग की तरफ ले जाया जा यह कार्य तभी हो सकता है। जब राष्ट्रीय चेतना से भरे हुए राष्ट्र के युवा कुछ करने की भावना से राष्ट की सेवा में अपने आप को लगायेंगे।

सन्दर्भ सूची

1. माधव, नीरजा, यमदीप, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, संस्करण 2018
2. भुराड़िया, निर्मला, गुलाम मंडी, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2016
3. भीष्म, महेंद्र, मैं पायल, अमन प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय संस्करण 2016
4. Bhartdarshan.co.nz
5. Kavitakosh.org
6. Hindikunj.com
7. https://www.kailasheducation.com/2020/06/sanskriti-arthparibhasha-visheshtaye.html
8. https://knowindia.gov.in/hindi/profile/literacy.php